



अक्टूबर जंक्शन

दिव्य प्रकाश दुबे

अक्टूबर जंक्शन
(उपन्यास)

अक्टूबर जंक्शन

दिव्य प्रकाश दुबे



ISBN : 978-93-87464-40-7

प्रकाशक :

हिन्दु-युग्म

201 बी, पॉकेट ए, मयूर विहार फ़ेस-2, दिल्ली-110091

मो.- 9873734046, 9968755908

आवरण डिजाइन : गरिमा शुक्ला

लेखक की तस्वीर : दिव्यांशु

पहला संस्करण : जनवरी 2019

© दिव्य प्रकाश दुबे

October Junction

A novel by Divya Prakash Dubey

Published By

Hind Yugm

201 B, Pocket A, Mayur Vihar Phase 2, Delhi-110091

Mob : 9873734046, 9968755908

Email : sampadak@hindyugm.com

Website : www.hindyugm.com

First Edition : Jan 2019

व्योम के लिए

मुझे उम्मीद है कि जब तुम बड़े होकर किताब पर अपना नाम पढ़ोगे तो तुम्हें उतनी ही खुशी होगी जितनी खुशी मुझे तुम्हारा नाम लिखते हुए

ਉੜੀ।

हमारी दो जिंदगियाँ होती हैं
एक जो हम हर दिन जीते हैं
दूसरी जो हम हर दिन जीना चाहते हैं
उस दूसरी जिंदगी के नाम।

प्रस्तावना-1

हमारे पास हर कहानी के दो वर्जन होते हैं। एक, दूसरे को सुनाने के लिए और दूसरा, अपने-आपको समझाने के लिए। जिस दिन हमारी कहानी के दोनों वर्जन एक हो जाते हैं उस दिन लेखक अपनी किताब के पहले पन्ने पर लिख देता है, “इस कहानी के सभी पात्र काल्पनिक हैं। इनका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से लेना-देना नहीं है।” यह एक अदना-सा झूठ पूरी कहानी को सच्चा बना देता है। अगर आप इस बात को ध्यान में रखकर इस कहानी में उतरेंगे तो आपके लिए आसानी होगी।

सारी दुनिया दिन-रात इस इंतजाम में है कि लोगों को कम-से-कम अपने अंदर झाँकने की फुर्सत मिले। इस दौर में किताब पढ़ना अपने आप में बड़ा काम है। किताब का काम वही है जो पानी का एक छोटे से पौधे के लिए होता है। खुशबू और खूबसूरती पानी में नहीं होती लेकिन हर पौधे को पानी में अपनी खुशबू ढूँढ़नी पड़ती है।

इस किताब को न लिखने की इतनी वजहें इकट्ठा हो गई थीं कि इस किताब को लिखना पड़ा। हर बार जब किताब शुरू करता हूँ तो ऐसा लगता है कि किताब पूरी ही नहीं हो पाएगी। कभी मैं खुद से नाराज हो जाता हूँ तो कभी किताब के किरदार नाराज हो जाते हैं। महीनों कोई बात ही नहीं होती फिर अचानक एक दिन सारे गिले-शिकवे भूलकर हम एक हो जाते हैं। जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो।

वैसे तो मैं इस कहानी और आपके बीच नहीं आना चाहता था लेकिन कुछ कहानियाँ ऐसी होती हैं कि जिनका सिरा सही से पकड़ने के लिए लेखक को बीच में आना ही पड़ता है। कहानी में घुसने से पहले बस आप कुछ बातें जान लें तो बेहतर होगा। अक्टूबर जंक्शन का ख्याल मेरे पास मुसाफिर कैफे लिखने से पहले से था लेकिन यह कहानी कुछ साल नाराज रही।

मैं कुछ और कहानियाँ ढूँढ़ता रहा, कुछ-कुछ लिखता रहा और बहुत कुछ मिटाता रहा। अक्टूबर जंक्शन का ख्याल बार-बार आता लेकिन हर बार बात अधूरी छूट जाती। मुझे नहीं मालूम इतना साफ-साफ लेखक को किताब के पहले पन्ने पर लिखना भी चाहिए या नहीं लेकिन कुछ बातें लिख और बोल देना बोझ उतार देने जैसा ही होता है।

मैं बहुत दिनों से ऐसी कहानी ढूँढ़ रहा था। ऐसी कहानी से मेरा क्या मतलब है मुझे खुद भी सही से नहीं पता। कहानियाँ लिखना ऐसे ही कुछ-न-कुछ ढूँढ़ते रहना है। जहाँ आपको बस एक धुँधला-सा विश्वास होता है कि ढूँढ़ने पर शायद कुछ मिल जाए।

आखिर में मुझे बस इतना समझ आया कि कुछ कहानियों को पढ़ने और लिखने का बस एक तरीका होता है कि हम उन कहानियों को जी लें। आप इस कहानी को जी पाएँ तो ठीक, नहीं तो इसको एक बुरा सपना मानकर भूल जाइएगा। समय एक दिन धीरे से अच्छी और बुरी दोनों कहानियों को मिटा देता है। बचते हैं तो कुछ लोग जो सुनी हुई कहानी को अपने हिसाब से बदलकर कहानियाँ आगे बढ़ाते रहते हैं।

हर बार किताब पढ़ने के बाद लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या वो सच्ची कहानी थी? मैं हमेशा जवाब घुमा-फिराकर देता हूँ या टाल जाता हूँ। बस एक चीज बता सकता हूँ कि इस कहानी के किरदार सच और सपने के बीच की छोटी-सी खाली जगह में मिले थे।

बंद मुट्ठी से खुली मुट्ठी भर ही हम जिंदगी को छू पाते हैं। बस इतना ही लेखक उस कहानी को छू पाता है जिसको वह अपने मन से कागज पर उतारने के लिए सालों बेचैन रहता है।

मुझे उम्मीद है आप अक्टूबर जंक्शन पढ़ते हुए उन्हीं रास्तों से, उन्हीं सच्चाइयों से, उन्हीं गलतियों से वैसे ही गुजरेंगे जिनसे इस कहानी के किरदार गुजरे हैं।

दिव्य प्रकाश दुबे, मुम्बई

10 अक्टूबर 2020, प्रेस कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

यूँ तो हिंदुस्तान में किताब का लॉन्च होना कोई इतनी बड़ी बात नहीं है लेकिन आने वाली किताब चित्रा पाठक की है, इसलिए दिल्ली में अच्छी-खासी सरगर्मी है। चित्रा की उम्र है करीब 37-38 साल। उसकी पिछली तीन किताबें कुल-मिलाकर 50 लाख से ऊपर बिकी हैं। जहाँ एक तरफ ऐसा लगता था कि किताब बेचने के मामले में चेतन भगत और अमीश त्रिपाठी को कोई पीछे नहीं छोड़ पाएगा, वहीं चित्रा उनको लगातार टक्कर देने लगी है। हिंदुस्तान का कोई ऐसा लिटरेचर फेस्ट कोई ऐसा बड़ा कॉलेज नहीं है जहाँ चित्रा को नहीं बुलाया जाता। चित्रा को क्या पसंद है क्या नहीं, यह पूरी दुनिया को पता है। शहर की कोई भी पेज-3 पार्टी बिना चित्रा के पूरी नहीं होती। हर संडे उसका आर्टिकल पेपर में आता है। वह तो आर्टिकल लिखकर भूल जाती है लेकिन उसके आर्टिकल पर सोशल मीडिया में तब तक डिस्कशन होता रहता है जब तक उसका अगला आर्टिकल नहीं आ जाता।

चित्रा हर 10 अक्टूबर को कुछ-न-कुछ बड़ा अनाउन्स करती है। चित्रा की किताब आए एक साल से ऊपर हो गया था। कुछ महीनों से उसने आर्टिकल लिखना भी बंद कर दिया था।

जिस दौरान चित्रा किताबों की दुनिया में अपनी जगह बना रही थी उसी दौरान एक और लेखिका सुरभि पराशर का नाम उभरकर आया। सुरभि पराशर हिंदुस्तान की किताबों की दुनिया का ऐसा नाम है जिसको हर कोई जानता है। सुरभि की पहली किताब तीन पार्ट की एक सीरीज है। उस किताब के दो पार्ट आ चुके हैं और तीसरे पार्ट का सबको इंतजार है। सुरभि का स्टाइल आजकल के सभी लेखकों से बिलकुल अलग है। सुरभि बच्चों के लिए किताब लिखती है जिसको बच्चे से लेकर बूढ़े तक सब पढ़ते हैं। मीडिया में यह भी माना जाता है कि सुरभि ने हिंदुस्तान का अपना हैरी पॉटर क्रिएट कर दिया है। किताब के दो पार्ट आने के बाद से बच्चों से लेकर बूढ़े तक तीसरी किताब का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। सुरभि पराशर और चित्रा पाठक की हर बात एक-दूसरे से अलग है। लिखने से लेकर लाइफ स्टाइल तक। कमाल की बात यह है कि सुरभि कहाँ रहती है, सुरभि की उम्र क्या है, उसने क्या पढ़ाई की है, वह रहने वाली कहाँ की है, ये किसी को भी नहीं पता। सुरभि की कोई फोटो उसकी किताब के पीछे नहीं आती। न ही वह कोई इंटरव्यू देती है, न ही किसी इवेंट में बोलने के लिए जाती है। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में कई बार बुलाए जाने के बाद भी सुरभि ने जाने के लिए कभी हामी नहीं भरी। मीडिया में अक्सर ही खबर चलती रहती है कि कोई बड़ा राइटर सुरभि पराशर के नाम से लिखता है।

सुरभि की पहली ही सीरीज की तीसरी किताब का इंतजार उसके लाखों फैन कर रहे हैं। सुरभि के पब्लिशर भी सुरभि के बारे में कोई जानकारी नहीं देते। जहाँ एक तरफ चित्रा को लिटरेचर के क्रिटिक कोई भाव नहीं देते वहीं सुरभि पराशर क्रिटिक्स की फेवरेट राइटर है। चूँकि सुरभि की किताबें भी लाखों में बिकती हैं इसलिए चित्रा पाठक को सोशल मीडिया पर ट्रोल